اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مُستَطرَف ج ۱ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

तालिबे ग़मे मदीना बक़ीअ़ व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 1)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह किताब **"उर्दू"** ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **"हिन्दी"** रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats app) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

-: राबित़ा :-
मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

मदनी मुन्नों के लिये बुन्यादी इस्लामी मा'लूमात पर मुश्तमिल मुनफ़रिद किताब

इस्लाम की बुन्यादी बातें

(हिस्सा 1)

साबिक़ा नाम

मदनी निसाब बराए मदनी क़ाइदा

पेशकश

मजलिसे मद्रसतुल मदीना

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

दा'वते इस्लामी

नाशिर

मक्तबतुल मदीना, देहली

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ   وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 1)

पेशकश : मजलिसे मद्रसतुल मदीना, मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

त़बाअ़ते अव्वल : रमज़ानुल मुबारक, 1435 (ता'दाद : 11,000)

त़बाअ़ते दुवुम : जुमादल उख़रा, 1437 (ता'दाद : 11,000)

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : यकुम रबीउ़ल ग़ौस, 1432 हि.   ह़वाला नम्बर : 168

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 1) (उर्दू)

(मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

6-03-2011

E-mail : ilmiapak@dawateislami.net

ज़िम्नी फ़ेहरिस्त

इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 1)

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 1)

फ़ज़ाइले कुरआने करीम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

येह कुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ज़ियाफ़त है तो तुम अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ इस की ज़ियाफ़त क़बूल करो। बेशक येह कुरआने मजीद, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मज़बूत रस्सी, नूरे मुबीन और नफ़्अ़ बख़्श शिफ़ा है, जो इसे इख़्तियार करता है उस के लिये ढाल और जो इस पर अ़मल करे उस के लिये नजात है। येह हक़ से नहीं फिरता कि इस के इज़ाले के लिये थकना पड़े और येह टेढ़ी राह नहीं कि इसे सीधा करना पड़े। इस के फ़वाइद ख़त्म नहीं होते और कसरते तिलावत से पुराना नहीं होता (या'नी अपनी ह़ालत पर क़ाइम रहता है)। तो तुम इस की तिलावत किया करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हर ह़र्फ़ की तिलावत पर दस नेकियां अ़ता फ़रमाएगा। मैं नहीं कहता कि "الٓمّٓ" एक ह़र्फ़ है बल्कि "الف" एक ह़र्फ़, "لام" एक ह़र्फ़, और "ميم" एक ह़र्फ़ है।

(المستدرك، الحديث: ٢٠٨٤، ج٢، ص٢٥٦)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है।

इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"अल मदीनतुल इल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "दा'वते इस्लामी" की तमाम मजालिस ब शुमूल "अल मदीनतुल इल्मिय्या" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ता'रीफ़ और सआ़दत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 685 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं: "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"

(تفسیر البیضاوی، پ ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۷۱، ج ۴، ص ۳۸۸)

पहले इसे पढ़ लीजिये

कुरआने मजीद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आख़िरी किताब है, इस को पढ़ने और इस पर अ़मल करने वाला दोनों जहां में कामयाब व कामरान होता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त अन्दरून व बैरूने मुल्क ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा के ला ता'दाद मदारिस ब नाम मद्रसतुल मदीना क़ाइम हैं। सिर्फ़ पाकिस्तान में ता दमे तह़रीर कमो बेश 75 हज़ार मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियों को ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है। इन मदारिस में कुरआने करीम के साथ साथ दीनी मा'लूमात और तरबिय्यत पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाती है ताकि मद्रसतुल मदीना से फ़ारिग़ होने वाला त़ालिबे इल्म ता'लीमे कुरआन के साथ साथ दीने इस्लाम की ता'लीमात से भी रू शनास हो और उस में इल्मो अ़मल दोनों रंग नज़र आएं, वोह हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर हो, अच्छाई और बुराई की पहचान रखता हो, बुरी आ़दतों से पाक और अच्छे अवसाफ़ का मालिक हो और बड़ा हो कर मुआ़शरे का ऐसा बा किरदार मुसलमान बने कि उ़म्र भर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश में मसरूफ़ रहे।

शो'बए क़ाइदा में कम उ़म्र मदनी मुन्ने ज़ेरे ता'लीम होते हैं चुनान्चे उन की ज़ेहनी सत़ह़ के मुत़ाबिक़ ऐसा निसाब पेश किया जा रहा है जिस में इब्तिदाई दीनी मा'लूमात तअ़व्वुज़, तस्मिया, सना, मुख़्तसर व आसान दुआ़एं, बुन्यादी अ़क़ाइद, दीगर ज़रूरी मसाइल, मा'लूमाते आ़म्मा में आस्मानी किताबें, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और सह़ाबा व औलियाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुतअ़ल्लिक़ इब्तिदाई मा'लूमात मौजूद हैं।

"इस्लाम की बुन्यादी बातें (हिस्सा 1)" की पेशकश का सेहरा मजलिसे मद्रसतुल मदीना और मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या के सर है जब कि दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से इस की शरई तफ़्तीश करवाई गई है।

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आ़म हो जाएं
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाएं

मजलिसे मद्रसतुल मदीना
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

ह़म्दे बारी तआ़ला[1]

तू ही मालिके बह़रो बर है या अल्लाहु या अल्लाह
तू ही ख़ालिके जिन्नो बशर है या अल्लाहु या अल्लाह
तू अबदी है तू अज़ली है तेरा नाम अ़लीमो अ़ली है
ज़ात तेरी सब से बरतर है या अल्लाहु या अल्लाह
वस्फ़ बयां करते हैं सारे संगो शजर और चांद सितारे
तस्बीह़े हर ख़ुश्को तर है या अल्लाहु या अल्लाह
तेरा चर्चा हर घर आंगन सह़रा सह़रा गुलशन गुलशन
वासिफ़ हर फूल और समर है या अल्लाहु या अल्लाह
ख़ल्क़त जब पानी को तरसे, रिम झिम रिम झिम बरखा बरसे
हर इक पर रह़मत की नज़र है या अल्लाहु या अल्लाह
रात ने जब सर अपना छुपाया चिड़ियों ने येह ज़िक्र सुनाया
नग़मा बार नसीमे सह़र है या अल्लाहु या अल्लाह
बख़्श दे तू अ़त्तार को मौला वासित़ा तुझ को उस प्यारे का
जो सब नबियों का सरवर है या अल्लाहु या अल्लाह

[1] ...... वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 92

ना'ते मुस्तफ़ा

आंखों का तारा नामे मुहम्मद
दिल का उजाला नामे मुहम्मद
दौलत जो चाहो दोनों जहां की
कर लो वज़ीफ़ा नामे मुहम्मद
नूहो ख़लीलो मूसा व ईसा
सब का है आक़ा नामे मुहम्मद
पाईं मुरादें दोनों जहां में
जिस ने पुकारा नामे मुहम्मद
पूछेगा मौला लाया है क्या क्या
मैं येह कहूंगा नामे मुहम्मद
अपने रज़ा के कुरबान जाऊं
जिस ने सिखाया नामे मुहम्मद
अपने जमीले रज़वी के दिल में
आ जा समा जा नामे मुहम्मद
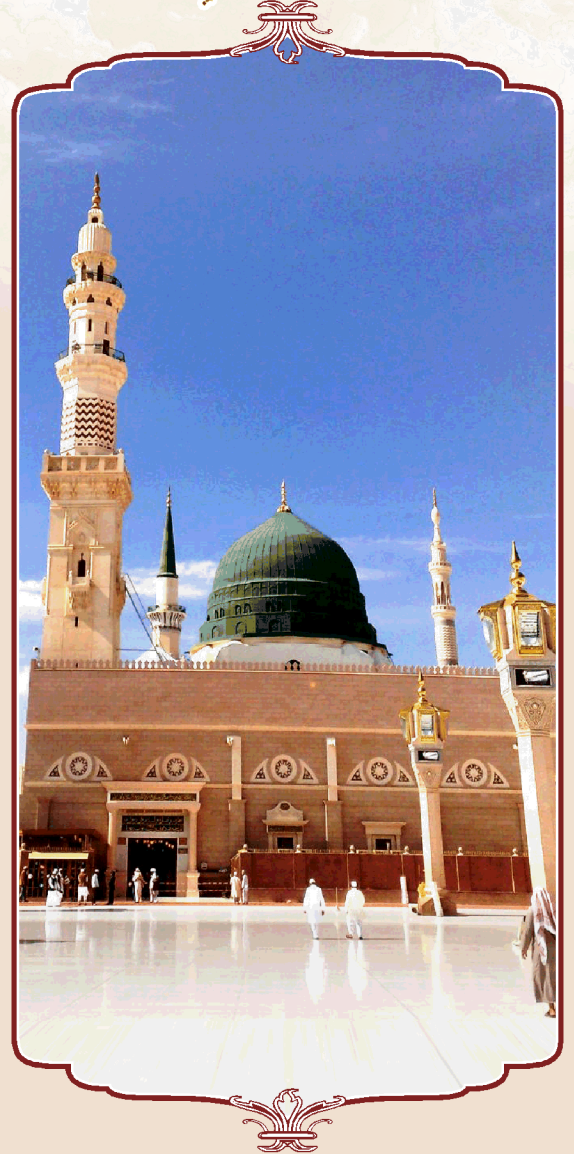
(मद्दाहे हबीब हज़रते मौलाना जमीलुर्रहमान रज़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی)

अज़कार

नमाज़

सना

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ط

तर्जमा : पाक है तू ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! और मैं तेरी ह़म्द करता हूं, तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी शान बहुत बुलन्द है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं ।

तअ़व्वुज़

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط

तर्जमा : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं शैत़ान मरदूद से ।

तस्मिया

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

तर्जमा : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला ।

कलिमे

पहला कलिमा तृय्यिब

(तृय्यिब मा'ना पाक)

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

तर्जमा : अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं हज़रत मुहम्मद (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अल्लाह के रसूल हैं।

दूसरा कलिमा शहादत

(शहादत मा'ना गवाही)

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ط

तर्जमा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि बेशक हज़रत मुहम्मद (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

तीसरा कलिमा तमजीद

(तमजीद मा'ना बुज़ुर्गी)

سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ
اَکْبَرُ ط وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ ط

तर्जमा : अल्लाह पाक है और सब ता'रीफ़ें अल्लाह के लिये हैं और अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है। गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ अल्लाह ही की त़रफ़ से है जो सब से बुलन्द, अ़ज़मत वाला है।

दुरूद शरीफ़

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله — وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله

दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल — और आप की अवलाद और आप के सहा़बा पर ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ الله — وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ الله

दुरूद और सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी — और आप की अवलाद और आप के सहा़बा पर ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नूर

[1]...... سُنَنِ اَبِی داوٗد، کتابُ المَناسِک، بابُ زیارۃِ القُبور، الحدیث: ۲۰۴۲، ج۲، ص۳۱۵

दुआएं

कुरआने पाक पढ़ने की दुआ :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط

तर्जमा : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं शैतान मरदूद से ।

बुलन्दी पर चढ़ने की दुआ :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है ।

बुलन्दी से उतरने की दुआ :

سُبْحٰنَ اللّٰهِ ط

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (हर ऐब) से पाक है ।
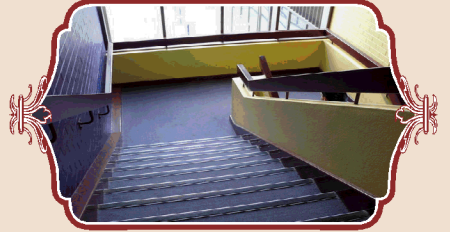
पानी पीने से पहले की दुआ :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

तर्जमा : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला ।

पानी पीने के बा'द की दुआ :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط

तर्जमा : सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जो मालिक सारे जहान वालों का ।

खाने से पहले की दुआ :

بِسْمِ اللّٰہِ وَعَلٰی بَرَکَۃِ اللّٰہِ ط

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बरकत पर (खाता हूं) ।
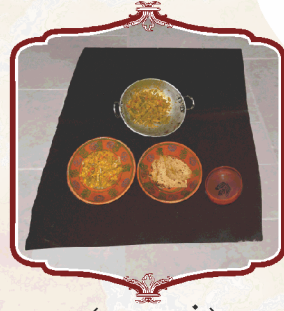
खाने के बा'द की दुआ :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِیْنَ ط [1]

तर्जमा : सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने हमें खिलाया और पिलाया और हमें मुसलमान बनाया ।

सोते वक़्त की दुआ :

اَللّٰھُمَّ بِاسْمِکَ اَمُوْتُ وَاَحْیٰی ط [2]

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे नाम से मरता (या'नी सोता) हूं और जीता (या'नी जागता) हूं ।

जागते वक़्त की दुआ :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْہِ النُّشُوْرُ ط [3]

---

[1] ......سُنن ابی داوٗد، کتابُ الاطعِمہ، الحدیث: ۳۸۵۰، ج ۳، ص ۵۱۳

[2] ......صحیحُ البُخاری، کتابُ الدّعوات، الحدیث: ۶۳۱۴، ج ۴، ص ۱۹۳

[3] ......المرجع السابق

तर्जमा : सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने हमें मौत (या 'नी नींद) के बा 'द हयात (या 'नी बेदारी) अ़ता फ़रमाई और हमें उसी की त़रफ़ लौटना है।

मुसलमान भाई से मुलाक़ात के वक़्त की दुआ :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه ط

तर्जमा : तुम पर सलामती हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और बरकतें हों।

मुसाफ़ह़ा करते वक़्त की दुआ :

يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ ط

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए।

शुक्रिय्या अदा करते वक़्त की दुआ :

جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا ط

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम को बेहतरीन बदला दे।

ईमानियात

ईमान और इस के बयान की क़िस्में

सुवाल... : ईमान किसे कहते हैं ?

जवाब... : हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने रब के पास से जो कुछ लाए, इन सब को हक़ जानने और सच्चे दिल से मानने को ईमान कहते हैं ।

सुवाल... : ईमान के बयान की कितनी क़िस्में हैं और कौन सी हैं ?

जवाब... : ईमान के बयान की दो क़िस्में हैं और वोह येह हैं :

(1)... ईमाने मुजमल (2)... ईमाने मुफ़स्सल

सुवाल... : ईमाने मुजमल किसे कहते हैं ?

जवाब... : ईमान के इजमाली (या'नी मुख़्तसर) बयान को "ईमाने मुजमल" कहते हैं ।

सुवाल... : ईमाने मुजमल और इस का तर्जमा सुनाइये ?

जवाब... :

ईमाने मुजमल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ
جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَتَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ ط

तर्जमा : मैं ईमान लाया अल्लाह पर जैसा कि वोह अपने नामों और सिफ़तों के साथ है और मैं ने उस के तमाम अह़काम क़बूल किये ज़बान से इक़रार करते हुवे और दिल से तसदीक़ करते हुवे ।

सुवाल... : ईमाने मुफ़स्सल किसे कहते हैं ?

जवाब... : ईमान के तफ़्सीली बयान को ''ईमाने मुफ़स्सल'' कहते हैं ।

सुवाल... : ईमाने मुफ़स्सल और इस का तर्जमा सुनाइये ।

जवाब... :

ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ط

तर्जमा : मैं ईमान लाया अल्लाह पर और उस के फ़िरिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और इस पर कि अच्छी और बुरी तक़दीर अल्लाह की त़रफ़ से है और मौत के बा'द उठाए जाने पर ।

पांच को पांच से पहले

प्यारे मदनी मुन्नो ! यक़ीनन ज़िन्दगी बे ह़द मुख़्तसर है, जो वक़्त मिल गया सो मिल गया, आइन्दा वक़्त मिलने की उम्मीद धोका है । क्या मा'लूम आइन्दा लम्ह़े हम मौत से हम आग़ोश हो चुके हों । रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले ग़नीमत जानो : (1) जवानी को बुढ़ापे से पहले (2) सिह़्ह़त को बीमारी से पहले (3) मालदारी को तंगदस्ती से पहले (4) फ़ुरसत को मशग़ूलिय्यत से पहले और (5) ज़िन्दगी को मौत से पहले । (المُسْتَدْرَک، الحديث:۷۹۱۶، ج۵ ص۴۳۵ دارالمعرفة بيروت)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

सुवाल ... : हमें किस ने पैदा किया है ?

जवाब ... : हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया है ।

सुवाल ... : ज़मीन, आस्मान, सूरज, चांद और सितारे किस ने बनाए ?

जवाब ... : ज़मीन, आस्मान, सूरज, चांद और सितारे सब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बनाए हैं ।

सुवाल ... : हम किस की इबादत करते हैं ?

जवाब ... : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ।

सुवाल ... : हर चीज़ को देखने और सुनने वाला कौन है ?

जवाब ... : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर चीज़ को देखने और सुनने वाला है ।

सुवाल ... : क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कोई चीज़ छुप सकती है ?

जवाब ... : जी, नहीं ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कोई चीज़ नहीं छुप सकती,
उस को हर चीज़ का इल्म है ।

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सुवाल... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक क्या है ?

जवाब... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है ।

सुवाल... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत किस शहर में हुई ?

जवाब... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत अ़रब के मशहूर शहर मक्कए मुकर्रमा में हुई ।

सुवाल... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत किस तारीख़ को और किस महीने में हुई ?

जवाब... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को हुई ।

सुवाल... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत किस दिन हुई ?

जवाब... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत पीर के दिन हुई ।

सुवाल... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदे मोहतरम का क्या नाम है ?

जवाब... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदे मोहतरम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का नाम हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه है ।

सुवाल... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का क्या नाम है ?

जवाब... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा का नाम हज़रते सय्यिदतुना आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا है ।

सुवाल... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रौज़ए मुबारका कहां है ?

जवाब... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रौज़ए मुबारका मदीनए मुनव्वरा में है ।

सुवाल... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी उम्र मुबारक कितनी थी ?

जवाब... : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी उम्र मुबारक 63 साल थी ।

हमारा दीन

सुवाल ... : हम कौन हैं ?

जवाब ... : हम मुसलमान हैं ।

सुवाल ... : हमारा दीन क्या है ?

जवाब ... : हमारा दीन इस्लाम है ।

सुवाल ... : मुसलमान किसे कहते हैं ?

जवाब ... : दीने इस्लाम के मानने वाले को मुसलमान कहते हैं ।

सुवाल ... : मुसलमान किस की इबादत करते हैं ?

जवाब ... : मुसलमान सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हैं ।

सुवाल ... : दीने इस्लाम क्या सिखाता है ?

जवाब ... : दीने इस्लाम सच्चाई, सफ़ाई, भलाई और अच्छाई सिखाता है ।

सुवाल ... : इस्लाम का कलिमा क्या है ?

जवाब ... : इस्लाम का कलिमा येह है :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

तर्जमा : अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं हज़रत मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अल्लाह के रसूल हैं ।

अरकाने इस्लाम

सुवाल... : अरकाने इस्लाम कितने हैं ?

जवाब... : अरकाने इस्लाम पांच हैं :

﴾1﴿... इस बात की गवाही देना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दे और रसूल हैं।

﴾2﴿... नमाज़ क़ाइम करना । ﴾3﴿ ... ज़कात अदा करना ।

﴾4﴿... हज करना । ﴾5﴿ .... रमज़ान के रोज़े रखना ।[1]

सुवाल... : दिन रात में कितनी नमाज़ें फ़र्ज़ हैं ?

जवाब... : दिन रात में पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं ।

सुवाल... : पांच फ़र्ज़ नमाज़ों के नाम बताइये ।

जवाब... : ﴾1﴿... फ़ज्र ﴾2﴿... ज़ोहर ﴾3﴿... अ़स्र ﴾4﴿... मग़रिब ﴾5﴿... इशा

सुवाल... : मुसलमानों पर किस महीने के रोज़े फ़र्ज़ हैं ?

जवाब... : मुसलमानों पर माहे रमज़ानुल मुबारक के रोज़े फ़र्ज़ हैं ।

सुवाल... : हज किस पर फ़र्ज़ है ?

जवाब... : हर साहिबे इस्तिताअ़त मुसलमान पर ज़िन्दगी में एक बार हज फ़र्ज़ है ।

सुवाल... : हज कहां अदा होता है ?

जवाब... : हज मक्कए मुकर्रमा में अदा होता है ।

---

1 ...... صحیحُ البُخاری، کتابُ الایمان، الحدیث:۸، ج ۱، ص ۱۴

फ़िरिश्ते

सुवाल... : फ़िरिश्ते कौन हैं ?

जवाब... : फ़िरिश्ते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नूरी मख़्लूक़ हैं।

सुवाल... : फ़िरिश्ते क्या करते हैं ?

जवाब... : फ़िरिश्ते वोही करते हैं जिस का उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हुक्म देता है।

सुवाल... : फ़िरिश्तों के सरदार कौन हैं ?

जवाब... : फ़िरिश्तों के सरदार ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام हैं।

सुवाल... : फ़िरिश्तों की ता'दाद कितनी है ?

जवाब... : फ़िरिश्तों की ता'दाद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं।

सुवाल... : फ़िरिश्तों की ग़िज़ा क्या है ?

जवाब... : फ़िरिश्तों की कोई ग़िज़ा नहीं, वोह न कुछ खाते हैं और न ही कुछ पीते हैं।

जन्नत मां के क़दमों तले है

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जन्नत माओं के क़दमों तले है। (كنز العمال، كتاب النكاح، الباب الثامن فی بر الوالدين، الحديث: ٤٥٤٣١، ج١٦، ص١٩٢)

अम्बिया व रुसुल عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

सुवाल... : नबी किसे कहते हैं ?

जवाब... : जिस इन्सान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हिदायत के लिये वह़ी भेजी हो उसे नबी कहते हैं ।

सुवाल... : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब से पहले किस नबी عَلَیۡہِ السَّلَام को पैदा फ़रमाया ?

जवाब... : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیۡہِ السَّلَام को पैदा फ़रमाया ।

सुवाल... : दुन्या में तशरीफ़ लाने वाले आख़िरी नबी عَلَیۡہِ السَّلَام कौन हैं ?

जवाब... : दुन्या में तशरीफ़ लाने वाले सब से आख़िरी नबी हमारे प्यारे आक़ा ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं ।

सुवाल... : क्या हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी पैदा हो सकता है ?

जवाब... : जी नहीं ! हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नबी पैदा नहीं हो सकता ।

सुवाल... : अगर कोई नबी होने का झूटा दा'वा करे तो उसे क्या कहते हैं ?

जवाब... : अगर कोई नुबुव्वत का झूटा दा'वा करे तो उसे "कज़्ज़ाब" कहते हैं ?

सुवाल... : क्या तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं ?

जवाब... : जी हां ।

सुवाल... : तमाम नबियों के सरदार कौन हैं ?

जवाब... : तमाम नबियों के सरदार हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं ।

सुवाल... : आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने कन्ज़ुल ईमान में नबी के क्या मा'ना बयान किये हैं ?

जवाब... : "ग़ैब की ख़बर देने वाला !"

सुवाल... : चन्द अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अस्माए मुबारक बताइये ।

जवाब... : हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام
हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ السَّلَام
हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام
हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام
हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام
हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام
हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात

सुवाल... : मो'जिज़ा किसे कहते हैं ?

जवाब... : ऐ'लाने नुबुव्वत के बा'द नबी से ख़िलाफ़े आ़दत ज़ाहिर होने वाली बात को मो'जिज़ा कहते हैं ।

सुवाल... : कौन से नबी عَلَيۡهِ السَّلَام लोहे को हाथ में लेते तो वोह मोम की त़रह़ नर्म हो जाता ?
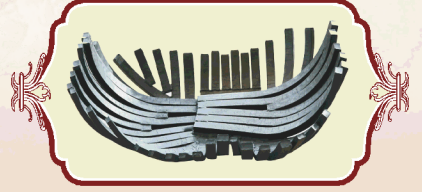
जवाब... : ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيۡهِ السَّلَام लोहे को हाथ में लेते तो वोह मोम की त़रह़ नर्म हो जाता ।

सुवाल... : किस नबी عَلَيۡهِ السَّلَام के अ़सा (या'नी लाठी) मारने से दरिया के दरमियान रास्ता बना ?

जवाब... : ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام के अ़सा मारने से दरिया के दरमियान रास्ता बन गया ।

सुवाल... : कौन से नबी عَلَيۡهِ السَّلَام तीन मील दूर से च्यूंटी की आवाज़ सुन कर मुस्कुराए ?
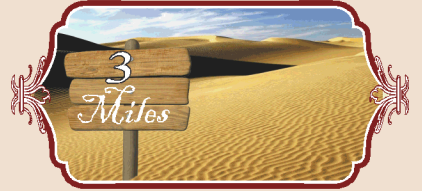
जवाब... : ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيۡهِ السَّلَام तीन मील दूर से च्यूंटी की आवाज़ सुन कर मुस्कुराए ।

सुवाल... : वोह जन्नती ऊंटनी किस नबी عَلَيۡهِ السَّلَام की थी जो अपनी बारी पर तालाब का सारा पानी पी जाती थी ?

जवाब... : वोह जन्नती ऊंटनी ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلَيۡهِ السَّلَام की थी जो अपनी बारी पर तालाब का सारा पानी पी जाती थी ।

आस्मानी किताबें

सुवाल... : आस्मानी किताबें किन किताबों को कहते हैं ?

जवाब... : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाज़िल की हुई किताबों को आस्मानी किताबें कहते हैं।

सुवाल... : आस्मानी किताबें किन पर नाज़िल हुईं ?

जवाब... : आस्मानी किताबें अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर नाज़िल हुईं।

सुवाल... : आस्मानी किताबें क्यूं नाज़िल की गईं ?

जवाब... : आस्मानी किताबें इन्सानों की हिदायत और रहनुमाई के लिये नाज़िल हुईं।

सुवाल... : मशहूर आस्मानी किताबें कौन सी हैं ?

जवाब... : ﴾1﴿... तौरैत ﴾2﴿... ज़बूर

﴾3﴿... इन्जील ﴾4﴿... कुरआने मजीद

ख़ुल्के इस्लाम

इस्लाम में हया को बहुत अहम्मिय्यत (اَہَم-مِی-یَت) दी गई है। चुनान्चे हदीस शरीफ़ में है : बेशक हर दीन का एक ख़ुल्क़ है और इस्लाम का ख़ुल्क़ हया है। (سُنَن ابن ماجہ ج ۴ ص ۴۶۰ حدیث ۴۱۸۱ دارُالمَعرِفة بيروت)

या'नी हर उम्मत की कोई न कोई ख़ास ख़स्लत होती है जो दीगर ख़स्लतों पर ग़ालिब होती है और इस्लाम की वोह ख़स्लत हया है।

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

सुवाल... : सहाबी किसे कहते हैं ?

जवाब... : जिस ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ईमान की ह़ालत में देखा और ईमान पर ही उस का ख़ातिमा हुवा उसे सह़ाबी कहते हैं ।

सुवाल... : ख़ुलफ़ाए राशिदीन से कौन से सह़ाबए किराम मुराद हैं ?

जवाब... : मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द बित्तरतीब जो चार सह़ाबए किराम मुसलमानों के अमीर बने उन्हें ''ख़ुलफ़ाए राशिदीन'' कहते हैं ।

सुवाल... : ख़ुलफ़ाए राशिदीन के नाम बताइये ?

जवाब... : ﴾1﴿... अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

﴾2﴿... अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

﴾3﴿... अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़समाने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

﴾4﴿... अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم

सुवाल ... : चन्द सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के नाम बताइये ।

जवाब ... : चन्द सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के नाम येह हैं :

﴾1﴿... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا

﴾2﴿... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا

﴾3﴿... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

﴾4﴿... हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

﴾5﴿... हज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

﴾6﴿... हज़रते सय्यिदुना इमाम हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

जन्नत में दरख़्त लगवाइये !

प्यारे मदनी मुन्नो ! वक़्त की अहम्मिय्यत का इस बात से अन्दाज़ा लगाइये कि अगर आप चाहें तो इस दुन्या में रहते हुवे सिर्फ़ एक सेकन्ड में जन्नत के अन्दर एक दरख़्त लगवा सकते हैं और जन्नत में दरख़्त लगवाने का त़रीक़ा भी निहायत ही आसान है। चुनान्चे इब्ने माजा शरीफ़ की एक ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ इन चारों कलिमात में से जो भी कलिमा कहें जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा। वोह कलिमात येह हैं : (1) سُبْحٰنَ اللّٰہ (2) اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ (3) لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ (4) اَللّٰہُ اَکْبَر

(سُنَن ابن ماجہ ج ۴ ص ۲۵۲ حدیث ۳۸۰۷ دارالمعرفۃ بیروت)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

सुवाल... : वलिय्युल्लाह किस को कहते हैं ?

जवाब... : अपनी ख़्वाहिशात को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत में फ़ना करने और हमेशा उन की इताअ़त व फ़रमां बरदारी करने वाले मुसलमान बन्दे को वलिय्युल्लाह कहते हैं।

सुवाल... : चन्द औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नाम बताइये और येह भी बताइये कि इन के मज़ारात कहां हैं ?

जवाब... : जन्नत के 8 दरवाज़ों की निस्बत से 8 औलियाए इज़ाम के नाम और मज़ारात येह हैं :

﴾1﴿ ...हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म) رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इन का मज़ारे मुक़द्दस इराक़ के शहर ''बग़दाद शरीफ़'' में है।

﴾2﴿ ...हज़रते सय्यिदुना मोईनुद्दीन चिश्ती (ख़्वाजा ग़रीब नवाज़) رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इन का मज़ार शरीफ़ हिन्द के शहर ''अजमेर शरीफ़'' में है।

﴾3﴿... ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

इन का मज़ारे मुबारक ईरान के शहर "सोहरवर्द शरीफ़" में है।

﴾4﴿... ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बहाउद्दीन नक़्शबन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

इन का मज़ारे मुक़द्दस उज़्बेकिस्तान के शहर "बुख़ारा" में है।

﴾5﴿ ... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली हजवेरी (दाता गन्ज बख़्श) رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

इन का मज़ार शरीफ़ पाकिस्तान के शहर मर्कज़ुल औलिया "लाहौर" में है।

﴾6﴿ ... ह़ज़रते सय्यिदुना बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

इन का मज़ारे मुक़द्दस पाकिस्तान के शहर मदीनतुल औलिया "मुलतान" में है।

﴾7﴿ ... ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه

इन का मज़ारे मुक़द्दस पाकिस्तान के शहर "पाक पतन शरीफ़" में है।

﴾8﴿ ... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن

इन का मज़ारे पाक हिन्द के शहर "बरेली शरीफ़" में है।

पाकी व त़हारत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : पाकीज़गी निस्फ़ ईमान है।

(صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب فضل الوضوء، الحدیث: ۲۲۳، ص ۱۴۰)

इबादात

वुज़ू

सुवाल... : वुज़ू के फ़राइज़ कितने और कौन कौन से हैं ?

जवाब... : वुज़ू के चार फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं :

लफ़्ज़ "अल्लाह" के चार हुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू के चार फ़राइज़ ।

﴾1﴿... चेहरा धोना

﴾2﴿ ... कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना

﴾3﴿... चौथाई सर का मस्ह करना

﴾4﴿ ... टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना [1]

[1] ......नमाज़ के अह़काम, स. 14

सुवाल... : वुज़ू करने से पहले क्या पढ़ना चाहिये ?

जवाब... : वुज़ू करने से पहले بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ना सुन्नत है।

सुवाल... : वुज़ू करने से पहले "بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه" पढ़ने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब... : वुज़ू करने से पहले "بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه" पढ़ने से जब तक वुज़ू बाक़ी रहेगा फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे।(1)

सुवाल... : दौराने वुज़ू ﴿يَا قَادِرُ﴾ पढ़ने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब... : जो शख़्स दौराने वुज़ू ﴿يَا قَادِرُ﴾ पढ़ेगा उस को दुश्मन इग़्वा नहीं कर सकेगा।

वुज़ू से गुनाह झड़ते हैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :
जब आदमी वुज़ू करता है तो हाथ धोने से हाथों के और चेहरा धोने से चेहरे के और सर का मस्ह करने से सर के और पाउं धोने से पाउं के गुनाह झड़ते हैं।

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث: ٤١٥، ج ١، ص ١٣٠ ملتقطاً)

(1) ...... مجمع الزوائد، کتاب الطهارة، الحديث: ١١٢، ج ١، ص ٥١٣

सुवाल... : क्या मदनी मुन्नों को भी नमाज़ पढ़नी चाहिये ?

जवाब... : जी हां ! मदनी मुन्नों को भी नमाज़ पढ़नी चाहिये ।

सुवाल... : नमाज़ की कितनी शराइत़ हैं ?

जवाब... : नमाज़ की 6 शराइत़ हैं ।

सुवाल... : नमाज़ के कितने फ़राइज़ हैं ?

जवाब... : नमाज़ के 7 फ़राइज़ हैं ।

सुवाल... : फ़ज्र की नमाज़ में कितनी रकअ़तें हैं और कौन कौन सी हैं ?

जवाब... : फ़ज्र की नमाज़ में 4 रकअ़तें हैं : दो सुन्नतें मुअक्कदा.... दो फ़र्ज़ ।

सुवाल... : ज़ोहर की नमाज़ में कितनी रकअ़तें हैं और कौन कौन सी हैं ?

जवाब... : ज़ोहर की नमाज़ में 12 रकअ़तें हैं :

चार सुन्नते मुअक्कदा.... चार फ़र्ज़ ... दो सुन्नते मुअक्कदा... दो नफ़्ल ।

सुवाल... : अ़स्र की नमाज़ में कितनी रकअ़तें हैं और कौन कौन सी हैं ?

जवाब... : अ़स्र की नमाज़ में 8 रकअ़तें हैं : चार सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा... चार फ़र्ज़ ।

सुवाल... : मग़रिब की नमाज़ में कितनी रकअ़तें हैं और कौन कौन सी हैं ?

जवाब... : मग़रिब की नमाज़ में 7 रकअ़तें हैं : तीन फ़र्ज़... दो सुन्नते मुअक्कदा... दो नफ़्ल ।

सुवाल... : इशा की नमाज़ में कितनी रकअ़तें हैं और कौन कौन सी हैं ?

जवाब... : इशा की नमाज़ में 17 रकअ़तें हैं : चार सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा... चार फ़र्ज़...

दो सुन्नते मुअक्कदा... दो नफ़्ल... तीन वित्र वाजिब... दो नफ़्ल ।

अच्छी अच्छी निय्यतें

"तिलावत की निय्यतें" के 12 हुरूफ़ की निस्बत से तिलावते क़ुरआने करीम की 12 अच्छी अच्छी निय्यतें

《1》... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और सवाब की निय्यत से कुरआने पाक की ता'लीम ह़ासिल करूंगा ।

《2》...मदनी क़ाइदे और कुरआने मजीद का अदब व एह़तिराम करूंगा ।

《3》...हुक्मे कुरआनी पर अ़मल करते हुवे मदनी क़ाइदे में आयाते कुरआनी और कुरआने पाक को बा वुज़ू छुऊंगा ।

《4》...मदनी क़ाइदे और कुरआने पाक को ता'ज़ीम की निय्यत से बोसा दूंगा ।

《5》... घर में भी तिलावत का मा'मूल बनाऊंगा ।

﴾6﴿ ... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये सारी ज़िन्दगी ठहर ठहर कर दुरुस्त मख़ारिज के साथ कुरआने पाक की तिलावत करूंगा ।

﴾7﴿ ... मदनी क़ाइदे और कुरआने पाक की तिलावत का सवाब अपने मुर्शिदे करीम, असातिज़ा, वालिदैन और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत को ईसाल करूंगा ।

﴾8﴿ ... कुरआने करीम के अह़कामात पर ज़िन्दगी भर अ़मल करूंगा ।

﴾9﴿ ... मदनी क़ाइदा और कुरआने पाक पर ग़ैर ज़रूरी निशानात नहीं लगाऊंगा ।

﴾10﴿... मदनी क़ाइदे और कुरआने पाक को शहीद होने से बचाऊंगा ।

﴾11﴿... मदनी क़ाइदे और कुरआने पाक को धूल मिट्टी से बचाने के लिये जुज़दान में रखूंगा ।

﴾12﴿... (निगाहें नीची रखने वाली सुन्नत पर अ़मल करते हुवे) दौराने तिलावत इधर उधर देखने से बचूंगा । اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

हुसूले इल्म से गुनाह झड़ते हैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो बन्दा इल्म की जुस्तजू में जूते या मौज़े या कपड़े पहनता है, अपने घर की चोखट से निकलते ही उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं। (المعجم الاوسط، الحديث: ٥٧٢٢، ج٤، ص٢٠٤)

मदीना मदीना हमारा मदीना[1]

मदीना मदीना हमारा मदीना
हमें जानो दिल से है प्यारा मदीना

सुहाना सुहाना दिल आरा मदीना
दिवानों की आंखों का तारा मदीना

येह हर आ़शिके़ मुस्त़फ़ा कह रहा है
हमें तो है जन्नत से प्यारा मदीना

वहां प्यारा का'बा यहां सब्ज़ गुम्बद
वोह मक्का भी मीठा तो प्यारा मदीना

बुला लीजिये अपने क़दमों में आक़ा
दिखा दीजिये अब तो प्यारा मदीना

फिरूं गिर्दे का'बा पियूं आबे ज़म ज़म
मैं फिर आ के देखूं तुम्हारा मदीना

ख़ुदा गर क़ियामत में फ़रमाए मांगो
पुकारेंगे दीवाने प्यारा मदीना

मदीने में आक़ा हमें मौत आए
बने काश ! मदफ़न हमारा मदीना

ज़िया पीरो मुर्शिद के सदके़ में आक़ा
येह अ़त्तार आए दो बारा मदीना

---

[1]......वसाइले बख़्शिश, (मुरम्मम) स. 355

मदनी फूल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा[1]

सलाम करने के मदनी फूल

- हर मुसलमान को सलाम करना चाहिये।
- मुसलमान सलाम करे तो उस का जवाब दीजिये।
- सलाम के बेहतरीन अलफ़ाज़ येह हैं :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه

- सलाम के जवाब के बेहतरीन अलफ़ाज़ येह हैं :

وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه

- सलाम में पहल करने वाले पर 90 और जवाब देने वाले पर 10 रहमतें नाज़िल होती हैं।[2]
- सलाम बुलन्द आवाज़ से करना चाहिये।
- सलाम का जवाब फ़ौरन देना वाजिब है।

---

[1] ……مشکوۃ المصابیح، الحدیث: ۱۷۵، ج ۱، ص ۵۵

[2] ……الجامع الصغیر، الحدیث: ۴۸۷، ملخصاً

- सलाम में पहल करना सुन्नते मुबारका है ।
- छोटा बड़े को सलाम करे ।
- घर में आते जाते सलाम करना सुन्नत है ।
- जब जब मुलाक़ात हो सलाम करना चाहिये ।

पानी पीने के मदनी फूल

- पानी बैठ कर पीना चाहिये ।
- पानी उजाले में देख कर पीना चाहिये ।
- पानी सीधे हाथ से पीना चाहिये ।
- पानी सर ढांप कर पीना चाहिये ।
- पानी "بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ" पढ़ कर पीना चाहिये ।
- पानी पीने के बा'द "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ" पढ़ना चाहिये ।
- पानी तीन सांस में पीना चाहिये ।
- पानी दोनों होंट मिला कर आहिस्ता आहिस्ता पीना चाहिये ।
- पानी पीते हुवे टपकने और गिरने से बचाना चाहिये ।
- बचा हुवा पानी नहीं फैंकना चाहिये ।

खाना खाने के मदनी फूल

- खाने से पहले और बा'द दोनों हाथ पहुंचों तक धोना सुन्नत है[1] और कुल्लियां कर के मुंह का अगला हिस्सा भी धो लीजिये।
- खाना सुन्नत के मुताबिक़ बैठ कर खाना चाहिये। एक सुन्नत येह है कि "सीधा घुटना खड़ा करें और उलटा पाउं बिछा कर उस पर बैठ जाएं।"[2]
- खाना दाएं हाथ की तीन उंगलियों (अंगूठा, शहादत की उंगली और बीच वाली उंगली) से खाना चाहिये।[3]
- खाने से पहले "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" पढ़ना सुन्नत है।[4]
- खाना छोटे छोटे निवाले बना कर अच्छी त़रह़ चबा कर खाना चाहिये।
- खाने के बा'द बरतन अच्छी त़रह़ साफ़ कर लीजिये।
- खाने के बा'द "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ" कहना चाहिये।
- अगर शुरूअ़ में بِسۡمِ اللّٰہ या दुआ़ पढ़ना भूल जाएं तो याद आने पर येह दुआ़ पढ़ें :

بِسۡمِ اللّٰہِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ[5]

- रोटी बाएं हाथ में ले कर दाएं हाथ से तोड़िये।

---

[1] ...... سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمه، باب الوضوعند الطعام، الحدیث: ۳۲۶۰، ج ۴، ص ۹

[2] ...... बहारे शरीअ़त, हिस्सा 16, स. 21

[3] ...... مرقاة، کتاب الاطعمه، ج ۸، ص ۸

[4] ...... صحیح مسلم، کتاب الاشربة، باب اداب الطعام... الخ، الحدیث: ۲۰۱۷، ص ۱۱۱۶

[5] ...... سنن ابی داود، کتاب الاطعمة، باب التسمیة علی الاطعام، الحدیث: ۳۷۶۷، ج ۳، ص ۴۸۷

- खाना ज़रूरत से ज़ियादा न लीजिये और गिरने से बचाइये ।
- रोटी के टुकड़े या चावल के दाने गिर जाएं तो उठा कर खा लीजिये कि मग़्फ़िरत की बिशारत है ।
- खाना खाने के बा'द हाथ धो कर अच्छी त़रह़ पौंछ लीजिये ।

छींक के मदनी फूल

- छींकते वक़्त सर झुकाइये और मुंह छुपाइये और आवाज़ आहिस्ता निकालिये ।
- छींक आने पर "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहना सुन्नत है ।
- सुनने वाले पर वाजिब है कि जवाब में "يَرْحَمُكَ الله" कहे ।
- जवाब सुन कर छींकने वाला कहे "يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ"

जमाही के मदनी फूल

- ह़दीसे पाक में है कि "जब कोई जमाही लेता है तो शैत़ान हंसता है ।"[1]
- जमाही शैत़ान की त़रफ़ से है, जहां तक हो सके इसे रोकना चाहिये ।[2]

---

[1] ……صحیح البخاری، کتاب الادب، الحدیث:٦٢٢٦، ج٤، ص١٦٣

[2] ……المرجع السابق

- जमाही आने लगे तो बाएं हाथ की पुश्त मुंह पर रखनी चाहिये।
- जमाही रोकने का मुजर्रब त़रीक़ा येह है कि दिल में ख़याल करे कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जमाही नहीं आती थी।[1]

नाख़ुन काटने के मदनी फूल

- लम्बे नाख़ुन शैत़ान की निशस्तगाह हैं या'नी इन पर शैत़ान बैठता है।[2]
- दांत से नाख़ुन तराशना मकरूह है और बर्स का बाइस है।[3]
- पहले दाएं हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगलिया या'नी छोटी उंगली समेत नाख़ुन काटें मगर अंगूठा छोड़ दें।
- फिर उल्टे हाथ की छुंगलिया से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काटें।
- आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाख़ुन काटें।

---

1 ......बहारे शरीअ़त, हिस्सए सिवुम, जि. 1, स. 538

٢ ......کیمیائے سعادت، ج ۱، ص ۱٦۸

٣ ......ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، ج ۹، ص ٦٦۸

अख़्लाक़िय्यात

अच्छे और बुरे काम

- वालिदैन और बड़ों के साथ हमेशा अदबो एह्तिराम से पेश आना चाहिये ।
- वालिदैन से ऊंची आवाज़ में बात करना बे अदबी है ।
- जब वालिदैन आएं तो उन के अदब में खड़ा हो जाना चाहिये ।
- दिन में कम अज़ कम एक मरतबा वालिद साहिब के हाथ और वालिदए मोह्तरमा के पाउं चूमना चाहिये ।
- वालिदैन का कहा हुवा हर जाइज़ काम ख़ुशदिली से करना चाहिये ।
- हर नमाज़ के बा'द वालिदैन, पीरो मुर्शिद और उस्ताज़ साहिब के लिये अच्छी अच्छी दुआएं कीजिये ।
- झूट बोलना बहुत बड़ा गुनाह है ।
- गाली देना ना जाइज़ व गुनाह है ।
- चोरी करना भी बहुत बड़ा गुनाह है ।
- किसी मुसलमान को तक्लीफ़ देना गुनाह है ।
- मस्जिद में शोर मचाना और हंसना मन्अ़ है ।
- ग़ीबत ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।
- चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा ।
- जो चुप रहा उस ने नजात पाई ।

इस्लामी महीनों के नाम

सुवाल... : मदनी माह (इस्लामी महीने) कितने और कौन कौन से हैं ?

जवाब... : मदनी माह (इस्लामी महीने) बारह हैं और वोह येह हैं :

《1》... मुह़र्रमुल ह़राम

《2》... सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

《3》... रबीउ़ल अव्वल

《4》... रबीउ़ल आख़िर

《5》... जुमादल ऊला

《6》... जुमादल उख़रा

《7》... रजबुल मुरज्जब

《8》... शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

《9》... रमज़ानुल मुबारक

《10》... शव्वालुल मुकर्रम

《11》... ज़ुल का'दतिल ह़राम

《12》... ज़ुल हिज्जतिल ह़राम

बुन्यादी मा'लूमात

दा'वते इस्लामी का आलमी मदनी मर्कज़ "फ़ैज़ाने मदीना" बाबुल मदीना कराची

सुवाल... : तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक का नाम बताइये।

जवाब... : "दा'वते इस्लामी"

सुवाल... : दा'वते इस्लामी के बानी का नाम बताइये।

जवाब... : अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

सुवाल... : दा'वते इस्लामी का मदनी मक़्सद क्या है?

जवाब... : दा'वते इस्लामी का मदनी मक़्सद येह है :
"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

सुवाल... : दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ का नाम क्या है और येह कहां वाक़ेअ़ है?

जवाब... : दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ का नाम "फ़ैज़ाने मदीना" है और येह बाबुल मदीना (कराची) में वाक़ेअ़ है।

सुवाल... : कुरआनो ह़दीस के बा'द उर्दू में पढ़ी जाने वाली इस्लामी किताबों में सब से ज़ियादा पढ़ी जाने वाली किताब कौन सी है?

जवाब... : एक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ कुरआनो ह़दीस के बा'द उर्दू में पढ़ी जाने वाली इस्लामी किताबों में सब से ज़ियादा पढ़ी जाने वाली किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की मक़्बूलिय्यत के सबब इंग्लिश, हिन्दी, गुजराती, सिन्धी और बंगला ज़बान में भी इस का तर्जमा हो चुका है।

सुवाल... : किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" के मोअल्लिफ़ का नाम बताइये।

जवाब... : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

तेरा करम है ज़ाते बारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी
निस्बत क्या है प्यारी प्यारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

आक़ा दे दो बे क़रारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी
करता रहूं मैं अश्कबारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

आक़ा सुन लो अ़र्ज़ हमारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी
पूरी करूं मैं ज़िम्मादारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

आक़ा तेरे सदक़े वारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी
नाज़ां हूं निस्बत पे हमारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

मैं हूं ज़ियाई मैं हूं रज़वी सग हूं ग़ौसे पाक का
क़ादिरी हूं क़ादिरी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

दर्सो बयां से क्यूं घबराऊं कैसा डर क्या ख़ौफ़ हो
क्यूं हो किसी का रो'ब त़ारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

देता रहूं नेकी की दा'वत चाहता हूं इस्तिक़ामत
गुज़रे यूं ही उ़म्र सारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

प्यारे आक़ा बख़्शवाना नारे दोज़ख़ से बचाना

इस्यां का है बोझ भारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

मैं भी देखूं मक्का मदीना मुर्शिद तेरी आंखों से

कब आएगी मेरी बारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

रौज़ए अक़्दस मिम्बरे नूर मैं भी देखूं काश ! हुज़ूर

प्यारी दिखा जन्नत की क्यारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

मीठे मुर्शिद मीठा ह़रम हो मौला अब तो ऐसा करम हो

ह़सरत निकले फिर तो हमारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

मेरे बापा मेरे दाता भर दो मेरा भी तुम कासा

फ़ैज़ तेरा है जग पे जारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

दे दो मुर्शिद कुफ़्ले मदीना बापा अ़ता हो फ़िक्रे मदीना

मैं हूं मंगता मैं हूं भिकारी अ़त्तारी हूं अ़त्तारी

शुक्रिय्या

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने लोगों का शुक्रिय्या अदा नहीं किया उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा नहीं किया । (سنن الترمذي، كتاب البرّ والصلة، باب ماجاء في الشكر ...إلخ، الحديث: ۱۹۶۲، ج۳، ص۳۸۴)

अवरादो वज़ाइफ़
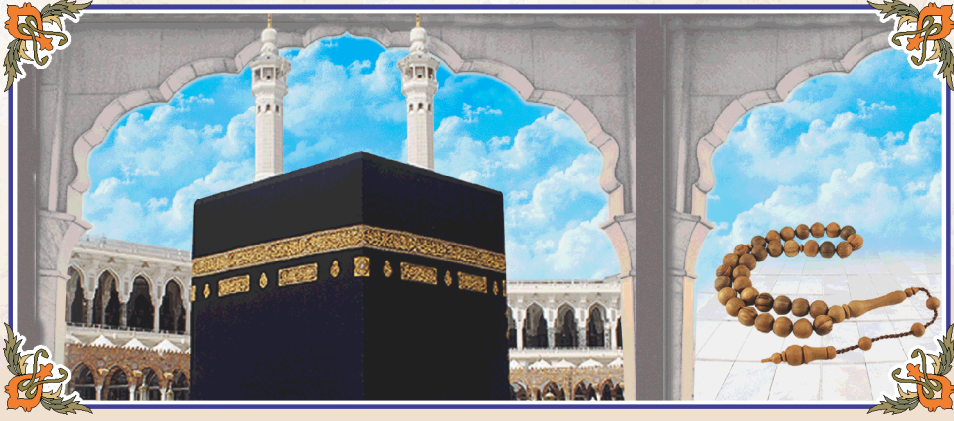
﴾1﴿...तस्बीहे फ़ातिमा :

हर नमाज़ के बा'द 33 बार ﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ ﴿ 33 बार ﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ﴿ और 34 बार ﴾ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ﴿ पढ़ें।

﴾2﴿... يَاسَلَامُ :

111 बार पढ़ कर बीमार पर दम करने से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा ह़ासिल होगी।

﴾3﴿... يَاوَهَّابُ :

जो रोज़ाना सात बार पढ़ेगा उस की हर दुआ क़बूल होगी।

﴾4﴿... يَاعَظِيْمُ :

सात बार पढ़ कर पानी पर दम कर के पीने से पेट का दर्द ख़त्म हो जाता है।

﴾5﴿... يَامُجِيْبُ :

तीन बार पढ़ कर दम करें, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर दूर होगा ।

﴾6﴿... يَاقَوِىُّ :

पांचों नमाज़ों के बा'द सीधा हाथ सर पर रख कर ग्यारह मरतबा पढ़ें कुव्वते हाफ़िज़ा मज़बूत होगी ।

दुरूद शरीफ़

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد [1]

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है उस पर रहमत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

जिस ने येह दुरूदे पाक पढ़ा उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई ।[2]

---

[1] ......القول البديع، ص ٢٧٧

[2] ......مجمع الزوائد، الحديث: ١٧٣٠٤، ج ١٠، ص ٢٥٤ ......المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث: ١٦٩٨٨، ج ٦، ص ٢٦

मन्क़बते ग़ौसे आ'ज़म

असीरों के मुश्किल कुशा ग़ौसे आ'ज़म[1]

मज़ारे मुबारक हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी

असीरों के मुश्किल कुशा ग़ौसे आ'ज़म
फ़क़ीरों के हाजत रवा ग़ौसे आ'ज़म

घिरा है बलाओं में बन्दा तुम्हारा
मदद के लिये आओ या ग़ौसे आ'ज़म

तेरे हाथ में हाथ मैं ने दिया है
तेरे हाथ है लाज या ग़ौसे आ'ज़म

मुरीदों को ख़तरा नहीं बहरे ग़म से
कि बेड़े के हैं नाख़ुदा ग़ौसे आ'ज़म

ज़माने के दुख दर्द की रंजो ग़म की
तेरे हाथ में है दवा ग़ौसे आ'ज़म

निकाला है पहले तो डूबे हुओं को
और अब डूबतों को बचा ग़ौसे आ'ज़म

मेरी मुश्किलों को भी आसान कीजिये
कि हैं आप मुश्किल कुशा ग़ौसे आ'ज़म

खिला दे जो मुरझाई कलियां दिलों की
चला कोई ऐसी हवा ग़ौसे आ'ज़म

कहे किस से जा कर हसन अपने दिल की
सुने कौन तेरे सिवा ग़ौसे आ'ज़म

[1]...... ज़ौक़े ना'त, स. 124-128

मुनाजात

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ [1]

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही
न पाऊं मैं अपना पता या इलाही

रहूं मस्तो बे ख़ुद मैं तेरी विला में
पिला जाम ऐसा पिला या इलाही

मैं बेकार बातों से बच कर हमेशा
करूं तेरी ह़म्दो सना या इलाही

मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम
तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही

गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली
मेरा ह़श्र में होगा क्या या इलाही

बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा
गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो
कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी
करम हो करम या ख़ुदा या इलाही

मुसलमां है अ़त्त़ार तेरी अ़त़ा से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

[1] .....वसाइले बख़्शिश, स. 105

सलातो सलाम

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम [1]

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वोह कान
काने ला'ले करामत पे लाखों सलाम

जिस के माथे शफ़ाअ़त का सेहरा रहा
उस जबीने सआ़दत पे लाखों सलाम

जिस के सजदे को मेहराबे का'बा झुकी
उन भवों की लताफ़त पे लाखों सलाम

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

पतली पतली गुले कुद्स की पत्तियां
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम

---

[1] ...... हदाइक़े बख़्शिश, स. 211-229

जिस की तस्कीं से रोते हुवे हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम

कुल जहां मिल्क और जव की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम

जिस सुहानी घड़ी चमका त़यबा का चांद
उस दिल अफ़रोज़ साअ़त पे लाखों सलाम

ग़ौसे आ'ज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जल्वए शाने कुदरत पे लाखों सलाम

काश महशर में जब उन की आमद हो और
भेजें सब उन की शौकत पे लाखों सलाम

मुझ से ख़िदमत के कुदसी कहें हां रज़ा
मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

फ़ैज़ से जिन के लाखों इमामे सजे
मेरे शैख़े त़रीक़त पे लाखों सलाम

जिस ने नेकी की दा'वत का जज़्बा दिया
उस अमीर अहले सुन्नत पे लाखों सलाम

दुआ़ के आदाब

- दुआ़ से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना (ता'रीफ़) बयान करनी चाहिये ।

  जैसे : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

- दुआ़ के शुरूअ़ और आख़िर में दुरूदे पाक पढ़ने से दुआ़ क़बूल होती है ।

  जैसे : اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله

- दुआ़ करते वक़्त निगाहें नीची रखनी चाहिये ।
- दुआ़ करते वक़्त इधर उधर देखने से नज़र कमज़ोर होने का अन्देशा है ।
- दुआ़ में दोनों हाथ इस त़रह़ उठाएं कि सीने की सीध में रहें ।
- दुआ़ करते वक़्त हथेलियों का रुख़ आसमान की त़रफ़ होना चाहिये ।

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی
الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ط

तर्जमा : ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और
हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा

اَللّٰهُمَّ رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا ط

तर्जमा : ऐ मेरे रब मुझे इल्म ज़ियादा दे।

थोड़े एह़सान का शुक्रिय्या

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: जिस ने थोड़े एह़सान का शुक्रिय्या अदा नहीं किया उस ने ज़ियादा का भी शुक्र नहीं किया।** (المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۱۸۴۷۷، ج۶، ص ۳۹۴)

ماخذومراجع

(1)......**قرآن مجید**: کلام باری تعالیٰ، ضیاء القران پبلی کیشنز لاهور

(2)......**صحیح البخاری**: امام محمد اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ، دارالکتب العلمیة بیروت

(3)......**صحیح مسلم**: امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشیری متوفی ۲۶۱ھ، دارابن حزم بیروت

(4)......**سنن ابی داود**: امام ابوداود سلیمان بن اشعث متوفی ۲۷۵ھ، داراحیاء التراث العربی

(5)......**سنن ابن ماجه**: امام ابوعبدالله محمد بن یزید القزوینی متوفی ۲۷۳ھ، دارالفکر بیروت

(6)......**المسند للامام احمد بن حنبل**: متوفی ۲۴۱ھ، دارالفکر بیروت

(7)......**الجامع الصغیر**: امام جلال الدین سیوطی متوفی ۹۱۱ھ، دارالکتب العلمیه بیروت

(8)......**مجمع الزوائد**: حافظ نورالدین علی بن ابوبکر هیثمی متوفی ۸۰۷ھ، دارالفکر بیروت

(9)......**مشکوة المصابیح**: الشیخ محمد بن عبدالله الخطیب التبریزی متوفی ۷۴۱ھ، دارالکتب العلمیه بیروت

(10)......**مرقاة المفاتیح**: الامام الشیخ علی بن سلطان محمد القاری ۱۰۱۴ھ، دارالفکر بیروت

(11)......**کیمیائے سعادت**: امام محمد بن احمد الغزالی متوفی ۵۰۵ھ،

(12)......**القول البدیع**: حافظ محمد بن عبدالرحمن السخاوی متوفی ۹۰۲ھ، مؤسسة الریان

(13)......**ردالمحتار**: علامه ابن عابدین الشامی متوفی ۱۲۵۲ھ، دارالمعرفه بیروت

(14)......**بهار شریعت**: صدرالشریعه مفتی امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ، ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور

(15)......**نماز کے احکام**: امیر اهلسنت حضرت علامه مولانا محمد الیاس عطار قادری، مکتبة المدینه باب المدینه کراچی

(16)......**حدائق بخشش**: اعلحضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ مکتبة المدینه باب المدینه کراچی

(17)......**وسائل بخشش**: امیر اهلسنت حضرت علامه مولانا محمد الیاس عطار قادری، مکتبة المدینه باب المدینه کراچی

(18)......**ذوقِ نعت**: مولانا حسن رضا خان

"بسم الله" शरीफ़ की बरकात व फ़वाइद

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "फ़ैज़ाने सुन्नत" सफ़ह़ा 134 ता 135 पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

- ......जो कोई सोते वक़्त بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ 21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ ले اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस रात शैत़ान, चोरी, अचानक मौत और हर त़रह़ की आफ़त व बला से मह़फ़ूज़ रहे।
- ......जो किसी ज़ालिम के सामने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ 50 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे।
- ......जो शख़्स तुलूए आफ़ताब के वक़्त सूरज की त़रफ़ रुख़ कर के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ 300 बार और (कोई भी) दुरूद शरीफ़ 300 बार पढ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा और (रोज़ाना पढ़ने से) اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक साल के अन्दर अन्दर अमीर व कबीर हो जाएगा।
- ......कुन्द ज़ेह्न अगर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ 786 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ हो जाए और जो बात सुने याद रहे। (शम्सुल मआ़रिफ़, मुतर्जम, स.73)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN 978-969-579-715-0
0101361
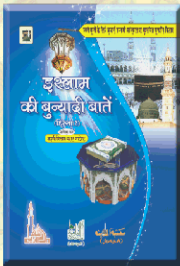
मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❋ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❋ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❋ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❋ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, web : www.dawateislami.net